

श्रसाध।रण

EXTRAORDINARY

भा I-- खण्ड I

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

Aio 114] No.114ì कई विल्ली, मंगलवार, श्रगात 15, 1967/श्रावग 24, 1889 NEW DELHI, TUESDAY, AUGUST 15, 1967/SRAVANA 24, 1889

इस भाग में भिन्न पृष्ट संख्या दी जाती है जिससे कि यह ग्रलग संकलन के रूप में रखा जा सके। Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation.

MINISTRY OF FINANCE

(Department of Revenue and Insurance)

NOTIFICATION

New Delhi, the 15th August 1967

No. 31/7/67-Ad.IIIB.—The President is pleased, on the occasion of Independence Day, 1967, to award Posthumously an Appreciation Certificate to the undermentioned officer of the Collectorate of Central Excise, Bombay, for exceptionally meritorious service rendered when undertaking a task even at the risk of his life:—

Name of the officer and rank:

Late Shri Jayant Sitaram Patole, Inspector of Central Excise.

Statement of services for which the Certificate is awarded:

On 24th February, 1967, Shri Patole, Inspector, Flying Squad, Shriwardhan, received information that a person had landed from Kutchi-Kotia Vessel carrying contraband from Dubai near Shriwardhan and was making arrangements for transhipment of goods and for this purpose was proceeding by the State Transport Bus to Bombay. Shri Patole, along with the staff, rushed to the State Transport Bus stop, detained one person named Ahmed Siddique and seized some documents from him. Shri Patole conveyed this information telegraphically to his senior officers and sought assistance. In the meantime, on receiving further information that some persons from the vessel would land in search of Ahmed Siddique, he,

with a view to keeping a watch over these persons, formed two groups—one led by himself at Pir and the other of the Custom House near the Jetty. The latter party was to be ready to rush to the snot immediately after getting a signal from him and intercept the suspected vessel. Accordingly, Shri Patole with his party proceeded to Haji Maskit Pir Danga Shriwardhan, on the night of 25th February 1967, while the other party kept witch over the sea shore at a distance of about three miles.

In the early hours of 26th February 1987 Shri Putole and his party saw four persons arriving at Darga and thereing he challenged them and apprehended two persons while the other two ron away. Shri Putole immediately ran after them, followed by the Sub-Inspector Shri Putole in the persons while the sub-Inspector Shri Putole in the wift them. One of the smugglers thereupon opened fire and Shri Putole too returned the fire with his revolver. Finally, one of the smugglers shot him in the abdomen inturing him seriously. The two smugglers ran away with his 380 revolver and Shri Patole was rushed to the hospital. All efforts were made to save his valuable life but to no evail, and Shri Patole unfortunately died on 3rd March 1937. In this operation, the late Shri Patole displayed a keen sense of resourcefulners and constituents bravery of a very high order. He performed his duty even at the risk of his life.

2. The award is made under clause (a)(i) of rary 1 of the Scheme governing the grant of award to the officers and graft of the Customs. Central Excise and Land Customs Departments published in Pr. 1 Section 1 of the Gazette of India Extraordinary Notification No. 19/139/59-Ad JUD dated the 5th November 1962, and consequently carries with it the monetary allowance admissible to his widew @Rs. 25 p.m., for a period of ten make or fill re-marriage of the widow, whichever is earlier under clause (b) of the Notification ibid read with clause (g) thereof as amended pidy Covernment of India Ministry of Finance (Department of Revenue) Notification No. 31/12/65-Ad JUB, dated the 27th November, 1985 published in Part 1. Section 1 of the Gazette of India dated Saturday, the 27th November, 1965. The monetary allowance will be admissible from the date of the incident viz. 26th February, 1937.

D. P. ANAND, Addl. Secv.

वित मंत्रालय

(राज व तथा बीमा विभाग)

श्रधिसृचना

नई दिल्ली, 15 स्रगरन 1967

सं० 31/7/67-एडी-IIIबी - स्वताबार विवस, 1967 के श्रदसर पर केन्द्रीय उत्पादन गृहक समाहती-कार्यालय वस्तर्घ के जिरमितिखित हाफसर को, धपने जीवन को भी मंतर में डावने वाला कार्य करते हुए की गई श्रमाधारण प्रधार सेता के तिये राष्ट्रपति जी यह प्रशंसा प्रमाण-पत्र उवत श्रधिकारी की मरणोक्तरान्त प्रदान करते हैं:—

ग्रकार का नास और पद

स्वर्गीय थीः जयन्त्र सोनाराम पनोले, निरीक्षण केन्द्रीय उत्सदन णुल्क

जिन सेव हो के शिवे प्रमाण-पत्र शिक्ष गया उत्का विवरण :

24 फरवरी 1967 को भी पतिले निरीजिए, भावन दसरा, श्रीवर्धन को यह सुचना प्राप्त हुई कि दुवाई से निधित प्रस्तुओं के नाथ लेकर एवं व्यक्ति कुन्ची-कोटिया जलयान से श्रीवर्धन के निकट उतरा था और मान की अन्य यान द्वारा भेजने की व्यवस्था कर एवा था तथा इप उद्देश्य से वह राज्य परिवहन अस से वस्पई जा रहा था। श्री पतिले अपने वर्षावरियों के नाथ राज्य परिवहन वस के श्रहें की और तेजी से भागे, और श्रहमद रिट्टीक नामन व्यक्ति को रोकी तथा उसके पास से कुछ कामज

पकड़े। श्री पतीले ने यह सूचना तार हारा अपने वरिष्ठ श्रधिकारियों तक पहुंचाई श्रीर मदद मांगी। इसी बीच, यह अतिरिक्त सूचना मिलने पर कि जलयान पर से कुछ व्यक्ति श्रह्मद सिद्दीक की खोज में उनिग, श्री पतीले ने इन व्यक्तियों पर निगरानी रखने के लिये दो दल बनाये। एक दल स्वयं श्री पतीले के नेतृत्व में पीर दरगाह पर रहा श्रीर इसरा दल जटी के पाम सीमाशुल्क गृह पर रहा। दूसरे दल को श्री पतीले से मंकेन मिलने ही तुरन्त घटनास्थल पर जाने को तैयार रहाना था श्रीर संदिग्ध जलयान को मार्ग में रोजना था। तदनुसार, श्री पतीले अपने दल के साथ 25-2-1967 की रात को श्रीवर्धन-स्थित होजी जिल्लाट पोर दरगाह के वहां एते श्रीर दुसरा दल करीब तीन मील दूर समृद्ध तट की निगरानी पर रहा।

26-2-- 1967 के बड़ सबरे श्री पतीले तथा उनके दल ने दरगाह पर चार व्यक्तियों की श्राते देखा और देखते ही श्री पतीले ने उन्ह टोका तथा दो व्यक्तियों की हिरासत में ले लिया, जितने में अन्य दो व्यक्ति भाग चले श्री पतीले ने उन्ह टोका तथा दो व्यक्तियों को हिरासत में ले लिया, जितने में अन्य दो व्यक्ति भाग चले श्री पतीले ने पाछ पीछ भाग। श्री पतीले ने पाम ही के जंगल में उनकी जा पहुड़ा और बड़ उनके गाथ गुन्थमगुन्था हो गये। इस पर एक तस्कर ने गोली चलाई और श्री पतीले ने भी अपने रिहालवर में जवाब में गोली चलाई। श्रीखरकार एक तस्कर ने श्री पतीले के पेट में गाली मार दी किन्से बहु बुरी तरह घायल हो गये। दोनों तस्कर श्री पतीले के . 380 रिवालवर को लेकर भाग गये। श्री पतीले को अस्मान ले जाया गया। उनके श्रमुख्य जीवन को बचाने के लिये पूरी कोशिण को नये। किन्तु कोई लाभ नहीं हुया। श्रीर दुःख है कि श्री पतीले का 3 मार्च 1967 को स्वर्गवाम हो गया। इन कार्यवाही में स्वर्गीय श्री पतीले ने श्रपनी प्रखर सूझ-बूझ एवं उच्च कोटि की विशिष्ट बोरना दिखाई श्रीर श्रीर अपने जावन को भी जाखिम में डालकर श्रीने कर्त्तव्य का पालन किया।

2. यह पुरस्कार सीमाजुलक, केन्द्रीय उत्पादन शुल्क तथा स्थल सीमा गुल्क विभागों के अफमरों और कर्मनितियों को पुरस्कार देने के संबंधित योजना को कण्डिका I के खण्ड (क) (I) के अस्तर्गत दिया जाता है। यह योजना भारत के गजट असाधारण के भाग I खण्ड 1 में अधिसूचना। संख्या 12/139/59-एंडी-बी दिनोंक 5 नवस्बर 1962 के रूप में अकाशित हुई थी तथा इसी के खण्ड (ख) के अक्तर्गत उनके बण्ड (छ) के जल्य पाठन पानना के अनुसार, जैसा कि भारत सरकार, बिन मंद्रालय राजस्व विभाग) की अधिसूचना। संख्या 31/12/65-एंडी-III-बी, दिनांक 27 नवस्बर 1965 द्वारा सजोधित को गई थी जो भारत के गल्य के भारत के बण्ड 1 में जितवार, 27 नवस्बर 1965 को प्रशाणित हुई थीं, 10 वर्ष की अवधि के लिये पथवा विधवा के पुनिवाह करने तक, जा भी पहले हो, 25 कार्य अनिभाह की दर से उनकी विधवा के देय वित्रीय भत्ता मिलने की मंजूरी भी इसमें निहित्त है। विश्रीय भत्ता बटना की ताराख यथित 26 फरवरी, 1967 से मिलेगा।

धर्म प्रकाश ग्रानन्द, ग्रतिरिक्त मचिव ।